❀ सत्यम् ❀ ❀ शिवम् ❀ ❀ सुन्दरम् ❀

देशेच राष्ट्रेच कुलेच राज्ञां, करोतु शांति भगवान् गणेशः

卐 यज्ञोपवीत प्रकरण 卐

-:❀ संग्रह कर्त्ता एवं प्रकाशक ❀:-

पंडित प्यारेलाल शर्मा

(भालता निवासी) हेड मास्टर पेंशनर

कसेरा बाजार, झालरापाटन सिटी

प्रथम बार पांच हजार	महर्षि गौतम जयंती संवत् २०१८ वि०	अमूल्य वितरण

श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १००८
श्री जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य जी
महाराज की ओर से

* शुभ कामना *

भारतीय संस्कृति में आचार का कितना महत्त्व है यह किसी भी सुपठित व्यक्ति से छिपा नहीं है। "आचारः परमो धर्मः" आचार ही परम धर्म है। आचार शुद्धि से क्रमशः मानव अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त करता है और अन्तःकरण की शुद्धि परमात्मा के निकट पहुँचाने की सामर्थ्य प्रदान करती है।

मानव को देवत्व की ओर ले जाने का सरल सुगम उपाय वेदमाता गायत्री की उपासना करना है गायत्री मन्त्र जपने का अधिकार यज्ञोपवीत धारण करने वाले को ही प्राप्त होता है। समय के प्रवाह में बहते हुये भारतीय अपने प्राचीन मानविन्दुओं और श्रद्धा केन्द्रों को भूलते जा रहे हैं। श्री प्यारेलालजी शर्मा ने "यज्ञोपवीत प्रकरण" द्वारा जनता को यह विषय समझाने का प्रयास किया है, उनके इस प्रयत्न की प्रशंसा करता हुआ, मैं समस्त सनातन धर्मी जनता से आशा करता हूँ कि वे इसे मनन पूर्वक पढ़ कर इस पुस्तिका में बताये गये नियमा-

चार को जीवन में उतार कर यश और पुण्य के भागी बनेंगे। शिवं भूयात्।

मूल स्थान	शुभैषी
बद्रिकाश्रम	सत्यमित्रानंद गिरी
अवान्तरस्थान भानपुरा	जगद्गुरु शंकराचार्य
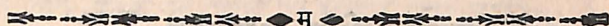
प्रकाशन के सहायकों की शुभ नामावली

* दी गई धन राशि सहित *

२५) पं० बद्रीलालजी भट्ट झालरापाटन सिटी
२५) पं० रामचंद्रजी व्यास बकानी [झालावाड़]
२५) पं० रामप्रसादजी जोशी ग्राम रटलाई
तहसील बकानी जिला झालावाड़
२५) पं० लक्ष्मीचन्दजी त्रिवेदी, ग्राम मोतीपुरा
तहसील बकानी जिला झालावाड़
२५) पं० भंवरलाल जी आचार्य (कनवाड़ी वाले)
दूकान रामगंजमंडी जिला कोटा
२५) पं० मदनलालजीमुखिया बै० मं० रामगंजमंडी
२५) पं० शिवनारायणजी चौबे, भैंसोदा (म. प्र.)
२५) पं० मोतीलालजी तिवारी घरनावद [कोटा]
२५) पं० भैरूलाल जी पंचोली, " "
२५) पं० प्यारेलाल मास्टर झालरापाटन सिटी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

यज्ञोपवीत प्रकरण

—:*:—

* मंगलाचरण *

मंगलं भगवान विष्णु, मंगलं गरुड़ ध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षः, मंगलायतनो हरिः॥

❀ संस्कार महत्त्व ❀

जगद्गुरु सनातन धर्म में संस्कारों का अधिक महत्त्व है। द्विज जातियों के जन्म से लेकर मरण तक आवश्यक १६ कृत्य हैं, जिन्हें १६ संस्कार, कहते हैं यों तो सभी संस्कार महत्त्व पूर्ण हैं किन्तु "यज्ञोपवीत संस्कार" अपना विशेष महत्त्व रखता है। इस यज्ञोपवीत संस्कार के होने पर ही बालक वैदिक कर्मकांड और यज्ञ करनेका अधिकारी होता है। यज्ञोपवीत संस्कार से ही बालक को 'द्विजत्व" की संज्ञा प्राप्त होती है।

मनुष्य मात्र की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिये भी संस्कारों का करना आवश्यक है।

※ यज्ञोपवीत वृतांत प्रारम्भः ※

सर्व साधारण के लाभार्थ यज्ञोपवीत विषय पर प्रश्न खड़े करके उन प्रश्नों का हेतुवाद द्वारा स्पष्टीकरण आवश्यक समझ पाठकों के अवलोकनार्थ विद्वानों के लेखों और ग्रन्थों के आधार पर प्रस्तुत है। त्रुटि के लिये क्षमा याचना।

प्रश्नः— यज्ञोपवीत संस्कार क्या है ?

उत्तरः-आचार्यस्य धर्मेण वेद वेदांगव्यापनपरम विदुषः। समीपे येन विधिनायेन लिंगेन कृत्येन च सहबालो नीयते सउपनयन बिधिः ॥

(य० प० पद्धति)

भाषार्थ-- धर्म पूर्वक वेद-वेदांग पढ़ने में तत्पर धर्मात्मा, विद्वान् आचार्य के समीप में जिस विधि, जिस चिन्ह धारण व क्रिया को कराके बालक विधि से वेदाध्यानार्थ लाया जाय उस विधि व कर्म का नाम उपनयन व यज्ञोपवीत संस्कार हैं।

प्रश्न :— यज्ञोपवीत नाम पड़ने का कारण क्या है ?

उत्तर-यज्ञोपवीत (यज्ञ + उपवीत) = यज्ञसूत्र यानी

यज्ञ का उत्तम साधन स्वरूप उपवीत (सूत्र)। यज्ञोपवीत विना, यज्ञ पूरा नहीं हो सकता। इसलिये इसको यज्ञोपवींत कहते हैं।

प्रश्न :—यज्ञोपवीत के और क्या नाम है ?

उत्तर -- यज्ञोपवीत को उपवीत, उपनयन, मौंजी जनेऊ, ब्रह्मसूत्र और यज्ञसूत्र आदि भी कहते हैं।

प्रश्न :—कितने वर्ष की आयु में वालक का यज्ञोपवीत संस्कार होना चाहिये।

उत्तर:—गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनं।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भस्तु द्वादशे विषः ॥
(मनु० २। ३६)

भाषार्थ—गर्भ से व जन्म से ब्राह्मण का आठवें वर्ष में, क्षत्री का ग्यारहवें वर्ष में और वैश्य का बारहवें वर्ष में उपनयन संस्कार होना आवश्यक है।

प्रश्न :--इससे आगे कितने वर्ष की आयु तक यह संस्कार हो जाना चाहिये।

उत्तर :— आशोड शाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नाति बर्तते। आद्वाविंशात्क्षत्र बन्धोरा चतुर्विन्शतेर्विशः
(मनु० २।३८)

भाषार्थ--ब्राह्मण का १६ वर्ष, क्षत्री का २० वर्षऔर वैश्य का २४ वर्ष तक यज्ञोपवीत संस्कार हो जाना

चाहिये। अर्थात् इतने वर्ष उपरांत उनकी सावित्री पतित हो जाती है, यानी वे संस्कारों से हीन हो जाते हैं तब उनका यज्ञोपवीत संस्कार करना और नकरना बराबर है।

प्रश्न—यज्ञोपवीत (जनेऊ) कितना लम्बा होना चाहिये ? उत्तर — ९६ चउआ।

नोट — ~~उत्तर~~-हाथकी चारों अंगुलियों को मिलाकर उनके मूल भाग के पास हाथ पर सूत की पूरी लपेट लगा कर 'जनेऊ' की नाप करते हैं उसे 'चउआ' कहते हैं।

प्रश्न–जनेऊ की नाप ९६ चउआ ही क्यों होनी चाहिये

उत्तर—–लक्षं वेदाश्चत्वारो लक्षमेकं तु भारतः। चारों वेदों के मंत्रों की संख्या एक लक्ष (लाख) है वेद के एक लाख मंत्रों में से अस्सी हजार मंत्रों में "कर्म काण्ड" और सोलह हजार मंत्रों में उपासना काण्ड" है। कर्म काण्ड और उपासना कांड के मंत्रों का जोड़ ९६ हजार है। जिस दिन बटुक (ब्रह्मचारी) गले में 'जनेऊ' डालता है, उस दिन प्रण करता है कि अस्सी हजार वेद मंत्रों में कहे हुये 'कर्म कांड और सोलह हजार मंत्रों में कहे हुये 'उपासना काण्ड' को आज मैं अपने कंधे पर धारण करता हूँ। इसी प्रयोजन से जनेऊ की नाप ९६ चउआ रखते हैं।

प्रश्न—जनेऊ पहनने का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—वटुक गले में जनेऊ डालते समय वेदों में कहे हुये 'कर्म और उपासना कांड' के अनुष्ठान (शास्त्रानुसार कर्म) करने का प्रण करता है, इसी प्रयोजन से जनेऊ पहिना जाता है।

प्रश्न-जनेऊ किस प्रकार तैयार किया जाता है ?

उत्तर—९६ चउआ लंबा सूत्र (डोरा) लेकर उसे त्रिगुण कर लिया जाता है अर्थात् तेहरा लिया जाता है। तेहराने का कारण यह भी है कि 'कर्म' और 'उपासना' में वेदत्रयी (ऋक्, यजु, साम) का विधान है यह वेदत्रयी, ग्रंथित होकर कार्य पूर्ति के लिये एकांगी होती है। 'कर्म' और 'उपासना' के कर्तव्य से देव, ऋषि और पितृ इन तीन ऋणों का दूरीकरण होता है। अतः वह तीन तन्तुओं का डोरा फिर से तेहराया जाता है। इस समस्त कर्तव्य से धर्म,अर्थ, काम इन तीन अलभ्य पदार्थों की प्राप्ति होती है। इस कारण इन नौ तन्तुओं के डोरे को फिर तेहराते हैं। इसके ऊपर एक ग्रन्थि लगाई जाती है जिसे "ब्रह्मपाश" कहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि कर्तव्य और उसका फल वेद में ग्रन्थित है। इसके लिये वेद से भिन्न अन्य ग्रन्थ देखने की आवश्यकता नहीं, इस'ब्रह्मपाश' के ऊपर किसी की जनेऊ में तीन ग्रन्थि और किसी की में पांच ग्रंथि

(अपने २ प्रवर के अनुसार लगती है। इसके ऊपर दोनों सिरों को मिला कर एक गांठ लगाई जाती है जो ऊपर होती है। इसका मतलब यह है कि यज्ञोपवीत सूचक कृत्यों के अनुष्ठान करने से मनुष्य परा और अपरा विद्या, यानी पदार्थ विद्या और ब्रह्म विद्या में कहे हुये ज्ञान का अधिकारी बनता है।

प्रश्न—कर्म, उपासना आदि में यज्ञोपवीत का और क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—(१) यज्ञोपवीत बायें कन्धे पर धारण करने से "उपवीती" कहलाता है तब "देवकर्म" करना चाहिये। (२) दाहिने कन्धे पर धारण करने से "प्राचीनोपवीती" कहलाता है तब 'पितृकर्म, करना चाहिये (३) कण्ठ में माला के समान धारण करने से "निवीती" कहलाता है तब 'ऋषि कर्म' करना चाहिये। सूचना:—स्तनों के ऊपर कण्ठ मात्र में व नाभी के नीचे जनेऊ धारण नहीं करना चाहिये।

[हिन्दुः मासिक पत्र के धर्मांक से]

प्रश्नः—जनेऊ कितने पहिनने चाहिये ?

उत्तर—उपवीतं बटोरेकं द्वे तथे तरयोस्मृतः।

(मदन पारिजात ग्रन्थ)

भावार्थ—ब्रह्मचारी के लिये एक जनेऊ हो और गृहस्थ तथा वान प्रस्थ के लिये दो हों।

प्रश्न–यज्ञोपवीत किस मन्त्र से धारण करनाचाहिए ?

प्रश्न—यज्ञोपवीत धारण करने से पूर्व, गायत्री मत्र से जल को दस बार पढ़ कर उस जल से यज्ञोपवीत पवित्रकर लेना चाहिये । गायत्री मंत्र यह है—

ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो–
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

फिर उस यज्ञोपवीत को निम्नाँकित मन्त्र बोल कर बायें कन्धे पर कण्ठ के पास से सिर बीच में निकाल दाहिने हाथ के नीचे बगल में निकाल कर कटि [कमर] तक धारण करें । मन्त्रः--

यज्ञोपवीतं परमं पवीत्रम्, प्रजापते र्यत्सहजं पुरुस्तात् ।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ।।

(पार० गृ० सू० का २ क० २ सू० ११)

प्रश्न— जीर्ण यज्ञोपवीत किस मन्त्र से विसर्जन करना चहिये ?

उत्तर— जीर्ण यज्ञोपवीत को कण्ठी करके सिर पर से पीठ की ओर निम्नांकित मन्त्र से विसर्जन करना चाहिए । मन्त्रः—

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छसूत्रयथा सुखं ।।

(नित्य कर्म प्रयोगमाला)

प्रश्न--यज्ञोपवीत विना विधि-विधान के पहिनने से क्या हानि है ?

उत्तर—यज्ञोपवीत बिना विधि-विधान के पहिनने वाले का तप और ज्ञान निष्फल हो जाते हैं ।

प्रश्न--प्रथम यज्ञोपवीत धारण करने के वाद दूसरा नवीन यज्ञोपवीत कब धारण करना चाहिए ?

उत्तर-श्रावण सुदी पूर्णिमा को श्रावणीकर्म के समय क्षय और वृद्धि सुतक के वाद । चन्द्र और सूर्य ग्रहण के अंत में। लघु और दीर्घ शंका निवारण करते समय कान पर जनेऊ चढ़ाना भूल जाने पर । टूट जाने पर । तथा किसी के "मृत्यु संस्कार" में सम्मिलित होने पर स्नान के वाद नवीन यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये ।

प्रश्न— यदि उपरोक्त प्रसंग का कभी अवसर न आवे तो फिर कब वदलना चाहिये ?

उत्तर-कम से कम तीन पक्ष और अधिक से अधिक तीन मास के बाद जनेऊ बदल लेना चाहिये । क्योंकि इसके बाद जनेऊ का महत्त्व "निवृत्त" हो जाता है ।

प्रश्न—लघुशंका और दीर्घशंका का निवारण करते समय "जनेऊ" कान पर क्यों चढ़ाते हैं ?

उत्तर—लघुशंका और दीर्घ शंका निवारण के समय

'जनेऊ' को पवित्र स्थान में ले जाना आवश्यक है। शरीर में सिर (माथा) पवित्र स्थान गिना जाता है। अतः उपरोक्त शंकाओं के निवारण के समय 'जनेऊ' कान पर चढ़ा लेते [लपेट लेते] हैं।

दूसरा कारण यह भी है कि कर्णेन्द्रिय और मूत्रेन्द्रिय का आपस में सम्बन्ध है और यज्ञोपवीत को कान पर लपेट लेने से किसी 'नाड़ी' विशेष पर दबाव आदि पड़ने से वीर्य दोषादि रोग नहीं होते हैं

कर्णेन्द्रिय और मूत्रेन्द्रिय के सम्बन्ध के वारे में प्रत्येक्ष प्रमाण है कि अण्डवृद्धि (अंत्रवृद्धि) रोग में कान की "नस" बींधी जाती है।

सूचना--सुश्रुत सं० चिकि० स्थान अ० १६-२१ में इसका विशेष विवरण देखियेगा।

प्रश्न-जनेऊ टूट जाने पर कई मनुष्य उसी स्थान पर खड़े होकर मौन व्रत धारण कर लेते हैं, क्या यह उचित है?

उत्तर--टूटा यज्ञोपवीत दिखाई पड़ते ही उसी स्थान पर खड़े होकर मौन व्रत धारण कर लेना अनुचित है। ऐसी अवस्था में दूसरा नवीन जनेऊ धारण करने तक खान-पान आदि त्याग रखना चाहिये।

प्रश्न बिना यज्ञोपवीत वदले खान-पानादि करलेने पर क्या प्रायश्चित् करना चाहिये?

उत्तर—बिना यज्ञोपवीत बदले भोजन कर लेने पर "नक्त व्रत" तथा जल पानकर लेने पर तीन 'प्राणायाम" एवं लघु व दीर्घशंका निवारण कर लेने पर १०८ बार 'गायत्री का जप करने से शुद्धि होती है।

❀ यज्ञोपवीत और गायत्री ❀

यज्ञोपवीत और गायत्री का घनिष्ट सम्बन्ध है। अतः यहाँ पर गायत्री के विषय में दो शब्द अंकित कर देना विषयांतर न होगा।

गायत्री मन्त्र यह है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

(यजु० ३६ । ३)

शाब्दिक अर्थ—ॐ (परमात्मा) भूः(प्राणस्वरूप) भुवः (दुःख नाशक) स्वः (सुख स्वरूप) तत् (उस) सवितः (तेजस्वी) वरेण्यम् (श्रेष्ठ) भर्गः (पाप-नाशक) देवस्य (दिव्य) धीमहि (धारण करें) धियो (बुद्धि) यः (जो) नः (हमारी) प्रचोदयात् (प्रेरित करें)।

इसका सरलार्थ इस प्रकार है:-

उस सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, प्राण स्वरूप, ब्रह्म को हम धारण करते हैं जो हमारी

बुद्धि को (सन्मार्ग की ओर) प्रेरणा देता है ।

* गायत्री जपमाहात्म्य *

सव्याहृतिकाँ सप्रणबाम् गायत्रीसिर सा सह
येजपन्ति सदा तेषाँ न भयं विद्यते क्वचित् ॥
(गुर्जर गौड़ ब्रा० उ० भा०)

अर्थ--सव्याहृतिकां यानि ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप:, ॐ सत्य: येतो सात व्याहृति और सप्रणव यानी ॐ कार सहित, ॐ तत्स वितुर्वरेण्यम्० इत्यादि गायत्री, सिर सा सह यानी 'ॐ आपो ज्योति रसोमृत: ब्रह्मभूर्भुव' स्व-रोम् इसको सिर कहते है, इन तीनों सहित गायत्री मंत्र का जप करे, उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता हैं ।

सूचना—जप के पूर्व की २४ मुद्रा व जप केबाद की ८ मुद्रा विषय सचित्र "नित्यकर्म विधि" नामक पुस्तक में देखिये ।

* जप यज्ञ *

सहस्र परमाँदेवीं शत मध्याम् दशा वराम् ।
गायत्रीं वै जपे नित्यं जप यज्ञ सकीर्तित: ॥
(गुर्जर गौड़ ब्रा० उ० भा०)

अर्थ--सदा नित्य प्रति एक हजार गायत्री जप करना श्रेष्ठ पक्ष, १०८ बार मध्यमपक्ष और दस बार जपने का हीन पक्ष है इसी को जपयज्ञ कहते हैं

❀ गुरु मन्त्र गायत्री ❀

वेदारम्भ के समय गुरु (आचार्य) शिष्य को सब से प्रथम "गायत्री मन्त्र" की ही शिक्षा देते हैं। अतः इसे "गुरु मन्त्र" कहते हैं।

—:गायत्री मन्त्र में २४ अक्षरः—

गायत्री मंत्र में प्रथम ॐ कार फिर भूः भुवः, स्वः ये ३ व्याहृति के अतिरिक्त २४ अक्षर होते हैं।

❀ वेद माता गायत्री ❀

गायत्री मन्त्र में वेदों का सार भरा हुआ है। इसलिये इसे "वेद माता" कहते हैं।

❀ इतिशुभम् ❀

'शर्मा' 'जोशी'

मुद्रकः-- पंडित लालाराम आर्य
संजय प्रि० प्रेस झालरापाटन सिटी
प्रिं०'क:च.' राठौड़

गौतम आरती

(तर्जः—ॐ जय जगदीश हरे ०)

ॐ जय गौतम त्राता. स्वामी जय गौतम त्राता।
ऋषिवर पूज्य हमारे मुद मंगल दाता ॥ टेक ॥
द्विज कुल कमल दिवाकर, परम 'न्याय, कारी।
जन-कल्याण करनहित, 'न्याय रच्योभारी। १॥
पिप्पलाद सुत बारह, तुम्हरे शिष्य हुये।
वेद, शास्त्र, दर्शन में पूरण कुशल भये। २
गुर्जर करण विनय पर, तुम पुष्कर आये
सभी शिष्य सुत गण को, तुम संग में लाये ३
अनावृष्टि से देख्यो, संकट आय पर्यो
भगवन आप दया करि सब को कष्टहर्यो ४
पुत्र प्राप्ति के कारण नृप के यज्ञ कियो
यज्ञ देव आशिष से, सुत को जनम भयो ।५।
भूप मनोरथ पूर्यो. चिन्ता दूर करी।
प्रेतराज पामर की निर्मल देह करी ॥६॥
अक्षपाद गौतम की, आरति जो गावे।
ऋषि की पूर्ण कृपा से मन वाँछित पावे ॥७॥

❀ महर्षि गौतम की जय ❀

रचयिताः—पं० प्यारेलाल मास्टर झालरापाटन।